

पाठ 29

1. क्या इस्राएलियों ने परमेश्वर के उन वचनों पर विश्वास किया जो उसने मूसा से कहे थे?

-हां।

2. यदि हम परमेश्वर के वचनों पर विश्वास नहीं करते हैं, तो हम परमेश्वर को क्या कहते हैं?

-एक झूठा।

3. क्या परमेश्वर उन लोगों को बचाएगा जो परमेश्वर के वचनों पर विश्वास नहीं करते हैं?

-नहीं।

4. फिरौन ने क्या कहा जब मूसा ने कहा कि यहोवा उसे इस्राएलियों को जाने देने की आज्ञा दे रहा है?

-फिरौन ने कहा, मैं यहोवा को नहीं जानता, और मैं इस्राएल को जाने न दूंगा।

5. क्या परमेश्वर जानता था कि फिरौन इस्राएलियों को मिस्र छोड़ने नहीं देगा?

-हां।

-परमेश्वर सब कुछ होने से पहले ही जानता है।

6. परमेश्वर ने फिरौन और मिस्रियों को अपनी महान शक्ति दिखाने का फैसला क्यों किया?

-तो उन्हें पता होगा कि वही सच्चा परमेश्वर है।

7. परमेश्वर ने मिस्रियों और इस्राएलियों को अपनी महान शक्ति कैसे दिखाई?

-परमेश्वर ने फिरौन और मिस्रियों पर बड़ी विपत्तियां भेजीं।

8. वे विपत्तियाँ क्या थीं?

-परमेश्वर ने नदी को खून में बदल दिया।

-परमेश्वर ने मिस्रियों को परेशान करने के लिए मँढक भेजे।

-परमेश्वर ने मिस्रियों को काटने के लिए मच्छर भेजे।

-परमेश्वर ने मिस्रियों को काटने के लिए मक्खियों को भेजा।

-परमेश्वर ने मिस्रियों के सभी मवेशियों को मार डाला।

-परमेश्वर ने मिस्रियों को बहुत दर्द देने के लिए फोड़े भेजे।

-परमेश्वर ने मिस्रियों की फसलों को नष्ट करने के लिए ओले भेजे।

-परमेश्वर ने मिस्रियों की फसल को खाने के लिए टिड्डियां भेजीं।

-परमेश्वर ने पूर्ण अंधकार भेजा ताकि मिस्रवासी देख न सकें।

9. हर बार जब परमेश्वर ने विपत्ति भेजी तो फिरौन ने क्या कहा?

-फिरौन ने मूसा से कहा कि वह इस्राएलियों को जाने देगा।

10. हर बार जब परमेश्वर ने प्लेग को दूर किया तब फिरौन ने क्या किया?

- फिरौन ने इस्राएलियों को जाने देने से इनकार कर दिया।

11. ये विपत्तियाँ इस्राएलियों के देश में क्यों नहीं आईं?

-क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब से वादा किया था कि

12. वह उन्हें आशीष देगा, और उन्हें एक महान व्यक्ति बना देगा।

-क्योंकि परमेश्वर फिरौन, मिस्रियों और इस्राएलियों को दिखा रहा था कि वह अकेला ही परमेश्वर है, और कोई दूसरा नहीं है।

13. परमेश्वर से लड़ने वालों का क्या होगा?

-परमेश्वर उन्हें नष्ट कर देंगे।

-यद्यपि परमेश्वर ने फिरौन और मिस्रियों के पास नौ भयानक विपत्तियां भेजी थीं, क्या फिरौन ने इस्राएलियों को जाने दिया?

-नहीं।

-क्या परमेश्वर को पता था कि फिरौन इस्राएलियों को जाने देने से इंकार कर देगा?

-हां।

-परमेश्वर हमेशा से जानता था कि फिरौन इस्राएलियों को जाने देने से इंकार कर देगा।

-इस्राएलियों का नेतृत्व करने के लिए परमेश्वर द्वारा मूसा को बुलाए जाने से पहले ही, परमेश्वर जानता था कि फिरौन इस्राएलियों को जाने देने से इंकार कर देगा।

-परमेश्वर सब कुछ होने से पहले जानता है।

-क्या फिरौन परमेश्वर से लड़ सकता है और जीत सकता है?

-नहीं।

-क्या कोई परमेश्वर से लड़ सकता है और जीत सकता है?

-नहीं।

-लोग कुछ भी कहें, वे परमेश्वर के कार्य को नहीं रोक सकते।

-लोग कुछ भी कर लें, वे परमेश्वर के कार्य को नहीं रोक सकते।

-अगर परमेश्वर कुछ करने का फैसला करता है, तो वह इसे हमेशा खत्म करेगा।

-परमेश्वर एक और विपत्ति भेजेगा, और फिर फिरौन इस्राएलियों को जाने देगा।

आइए पढ़ें निर्गमन 11:1

1-अब यहोवा ने मूसा से कहा था, “मैं फिरौन और मिस्र पर एक और विपत्ति लाऊँगा। उसके बाद, वह तुम्हें यहाँ से जाने देगा, और जब वह करेगा, तो वह तुम्हें पूरी तरह से बाहर निकाल देगा।”

-परमेश्वर द्वारा भेजे जाने वाली आखिरी विपत्ति क्या होनी चाहिए थी?

आइए पढ़ें निर्गमन 11:4-7

4-तब मूसा ने कहा, “यहोवा यों कहता है, कि आधी रात को मैं पूरे मिस्र में घूमूंगा।

5 मिस्र में सब पहिलौठा पुत्र, फिरौन के पहलौठे पुत्र से, जो सिंहासन पर विराजमान है, और दासी के पहलौठे पुत्र, जो उसके हाथ चक्की पर है, और सब पहिलौठोंको भी मार डाला जाएगा।

6-पूरे मिस्र में ऊँचे-ऊँचे हाहाकार मचेंगे—इससे भी बुरा हाल न कभी होगा और न कभी होगा।

7 परन्तु इस्राएलियोंमें से कोई मनुष्य वा पशु को कुत्ता न भोंकेगा। तब तुम जान लोगे, कि यहोवा मिस्र और इस्राएल में भेद करता है।

-आखिरी प्लेग मिस्रियों के सभी पहलौठे बच्चों और मवेशियों को मार डालेगी।

-क्योंकि आखिरी विपत्ति सबसे भयानक थी, इसलिए परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा कि वे प्लेग की तैयारी करें।

-क्योंकि आखिरी विपत्ति सबसे भयानक थी, इसलिए परमेश्वर ने इस्राएलियों को ऐसा करने की क्या आज्ञा दी थी कि उनके पहलौठे की मृत्यु न हो?

आइए पढ़ें निर्गमन 12:1 और 3-5

1- यहोवा ने मिस्र में मूसा और हारून से कहा,

3 “इस्राएल की सारी मण्डली से कहो, कि इस महीने के दसवें दिन को हर एक पुरुष अपने घराने के लिथे एक एक मेमना ले ले, अर्थात् अपने घराने के लिथे एक एक मेमना।

4-यदि कोई घराना इतना छोटा हो कि एक पूरे मेमने के बराबर न हो, तो वह उन लोगों की संख्या को ध्यान में रखते हुए अपने निकटतम पड़ोसी के साथ बांटे। प्रत्येक व्यक्ति क्या खाएगा, इसके अनुसार आपको भेड़ के बच्चे की मात्रा निर्धारित करनी होगी।

5 और जो पशु तू ने चुने वे एक वर्ष के निर्दोष नर हों, और तू उन्हें भेड़-बकरियोंमें से ले लेना।”

-परमेश्वर ने प्रत्येक इस्राएली परिवार के प्रत्येक पति को क्या करने की आज्ञा दी, ताकि उनका पहलौठा न मरे?

-एक साल के नर मेमने या बकरी को चुनने के लिए।

-किस प्रकार का मेमना या बकरी परमेश्वर ने इस्राएलियों को चुनने की आज्ञा दी ताकि उनका पहलौठा मर न जाए?

-दोष रहित एक।

-परमेश्वर ने यह आदेश क्यों दिया कि एक वर्षीय भेड़ या बकरी दोष रहित हो?

-क्योंकि ईश्वर पूर्ण है।

-क्योंकि परमेश्वर जो कुछ भी कहते हैं वह सब सही है।

-क्योंकि ईश्वर जो कुछ भी करता है वह संपूर्ण होता है।

-परमेश्वर केवल एक साल के नर मेमने या बकरी को ही स्वीकार करेंगे जो बिना किसी दोष के थे।

-परमेश्वर एक बीमार बलिदान को कभी स्वीकार नहीं करेंगे।

-परमेश्वर एक घायल बलिदान को कभी स्वीकार नहीं करेंगे।

-क्या आपको वह मेढ़ा याद है जो इसहाक के बजाय बलिदान के लिए झाड़ी में अपने सींगों से पकड़ा गया था?

-राम को उसके सींगों से क्यों पकड़ा गया?

-क्योंकि ईश्वर पूर्ण है।

-क्योंकि परमेश्वर केवल एक पूर्ण बलिदान को स्वीकार करेंगे।

-यदि इस्राएलियों को मृत्यु से बचाया जाना था, तो उन्हें क्या करने में सावधानी बरतनी थी?

-परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना।

-और दोष रहित एक वर्षीय नर भेड़ या बकरी का ही चयन करें।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को और क्या करने की आज्ञा दी?

आइए पढ़ें निर्गमन 12:6

6-यहोवा ने कहा, "महीने के चौदहवें दिन तक पशुओं की चौकसी करना, जब तक इस्राएली मण्डली के सब लोग गोधूलि के समय उनका वध करें।"

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को मेमना रखने की आज्ञा कब तक दी?

-महीने के चौदहवें दिन तक।

-महीने के चौदहवें दिन, परमेश्वर ने इस्राएलियों को मेमने के साथ क्या करने की आज्ञा दी?

-परमेश्वर ने आदेश दिया कि मेमने को मार डाला जाना चाहिए।

-परमेश्वर ने आज्ञा दी कि मेमने को मरना चाहिए।

-परमेश्वर ने मेमने को मरने की आज्ञा क्यों दी?

-यह इस्राएलियों को यह सिखाने के लिए था कि पाप के लिए परमेश्वर की सजा मृत्यु है।

-आदम और हव्वा के पाप करने से पहले, दुनिया में कोई मौत नहीं थी।

-क्योंकि आदम और हव्वा ने पाप किया, मृत्यु दुनिया में आई।

-क्योंकि आदम और हव्वा ने पाप किया, मृत्यु सभी लोगों के लिए आती है।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को मेमने के खून से क्या करने की आज्ञा दी?

-एक कटोरी में मेमने का खून पकड़ने के लिए।

-यदि इस्राएलियों को मृत्यु से बचाना है, तो उन्हें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने में सावधानी बरतनी चाहिए।

-और एक वर्ष के भेड़ या बकरी के भेड़ के बच्चे को मार डालना, और उसका खून एक कटोरे में रखना।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को कटोरे में मेमने के खून के साथ क्या करने की आज्ञा दी?

आइए पढ़ें निर्गमन 12:7

7 फिर यहोवा ने कहा, तब वे उस लोहू में से कुछ लेकर उन घरोंकी चौखटोंके अलंगोंऔर सिरोंपर लगाएं जहां वे भेड़ के बच्चे खाते हैं।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि वे लोहू को उस घर के द्वार के ऊपर और दोनों ओर लगाएं जहां वे उस रात मेमने का मांस खा रहे होंगे।

-यह मेमने का खून था जो इस्राएलियों को परमेश्वर की सजा से बचाएगा।

-यदि इस्राएलियों को मृत्यु से बचाना था, तो उन्हें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने में सावधानी बरतनी थी।

-और उस लोहू को ऊपर और उस घर के द्वार के दोनों ओर जहां वे उस रात मेमने का मांस खा रहे होंगे, लगा देना।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को और क्या आज्ञा दी?

आइए पढ़ें निर्गमन 12:22ब

22 यहोवा ने कहा, तुम में से कोई भोर तक अपने घर के द्वार से बाहर न निकले।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि वे भोर तक लोहू उसके द्वार पर रखे हुए घर में रहें।

-इस्राएलियों को लहू के साथ भीतर ही रहना था।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को घर के अंदर खून के साथ बाहर रहने की आज्ञा क्यों दी?

-बाहर का लहू इस्राएलियों को भीतर से ढांपने के लिये था।

-मेमने की मृत्यु बाहर से इस्राएलियों को भीतर से ढांपने के लिये हुई थी।

-यदि इस्राएलियों को मृत्यु से बचाना था, तो उन्हें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने में सावधानी बरतनी थी।

-और घर के दरवाजे पर खून के साथ सुबह तक रहो।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को और क्या आज्ञा दी?

आइए पढ़ें निर्गमन 12:46ख

46-यहोवा ने कहा, “हड्डियों में से किसी को न तोड़ना।”

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि वे मेमने की किसी भी हड्डी को न तोड़ें।

-यदि इस्राएलियों को मृत्यु से बचाना था, तो उन्हें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने में सावधानी बरतनी थी।

-और मेमने वा बकरी की किसी हड्डी को न तोड़ना।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा कि वे सब कुछ ठीक वैसा ही करें जैसा उसने आज्ञा दी थी।

-यदि इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सब कुछ नहीं किया, तो उनका क्या होगा?

-उन पर विपत्ति आएगी, और उनका पहलौठा भी मर जाएगा।

-ईश्वर इस्राएलियों के पहलौठे को तभी बचाएगा जब उन्होंने सब कुछ ठीक वैसा ही किया जैसा उसने आज्ञा दी थी।

-ईश्वर इस्राएलियों के पहलौठों को तभी बचाएगा जब वे परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करेंगे।

-क्या परमेश्वर हमें अपने तरीके से खुद को बचाने की अनुमति देंगे?

-नहीं।

-किसका रास्ता एकमात्र रास्ता है जो हमें बचाएगा?

-परमेश्वर का रास्ता।

-क्या हुआ जब आदम और हव्वा ने अपने रास्ते पर चले और पत्तों से कपड़े बनाए?

-परमेश्वर ने उनके कपड़े खारिज कर दिए।

-क्या हुआ जब कैन ने अपने मार्ग का अनुसरण किया और परमेश्वर के कहे अनुसार बलिदान करने से इनकार कर दिया?

-परमेश्वर ने कैन के बलिदान को अस्वीकार कर दिया।

-परमेश्वर का मार्ग ही एकमात्र मार्ग है जो हमें बचाएगा।

-अगर हम परमेश्वर का रास्ता नहीं अपनाते हैं, तो परमेश्वर हमें अस्वीकार कर देंगे।

-अगर इस्राएली उसकी बात मानेंगे तो परमेश्वर ने क्या वादा किया था?

आइए पढ़ें निर्गमन 12:12-14

12-यहोवा ने कहा, “उसी रात मैं मिस्र में से होकर निकलूंगा, और सब पहिलौठोंको क्या मनुष्य क्या पशु, मार डालूंगा, और मिस्र के सब देवताओं का न्याय करूंगा। मैं यहोवा हूँ।

13- जिन घरों में तू रहता है, उन पर लोहू तेरे लिथे चिन्ह ठहरेगा; और जब मैं लोहू देखूंगा, तब तुम्हारे ऊपर से होकर निकलूंगा। जब मैं मिस्र पर प्रहार करूंगा, तब कोई विनाशकारी विपत्ति तुम्हें नहीं छुएगी।

14-यह एक ऐसा दिन है जिसे तुम स्मरण करोगे; क्योंकि आनेवाली पीढ़ियों को तुम यहोवा के लिथे यह पर्व मानो जो सदा की आज्ञा है।”

-यदि इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया, तो परमेश्वर ने क्या करने का वचन दिया?

-परमेश्वर ने वादा किया था कि प्लेग उन पर नहीं आएगा, और उनके पहलौठे नहीं मरेंगे।

-क्या इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञा मानी?

आइए पढ़ें निर्गमन 12:28

28 इस्राएलियों ने वही किया जो यहोवा ने मूसा और हारून को आज्ञा दी थी।

-इस्राएलियों ने ठीक वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उन्हें करने की आज्ञा दी थी।

-यदि कोई इस्राएली एक बीमार मेमने को बलि के लिए चुनता, तो क्या परमेश्वर उसे बचाता?

-नहीं।

-यदि कोई इस्राएली केवल एक मेमने को दरवाजे के पास बांधकर मारेगा नहीं, तो क्या परमेश्वर उसे बचाएगा?

-नहीं।

-मेमने को मरना पड़ा।

-मेमने का खून बहाना पड़ा।

-परमेश्वर नहीं चाहते थे कि इस्राएली यह भूल जाएं कि पाप के लिए परमेश्वर की सजा मृत्यु है।

-उस रात बाद में क्या हुआ?

आइए पढ़ें निर्गमन 12:29-30

29 आधी रात को यहोवा ने मिस्र में सिंहासन पर विराजमान फिरौन के पहलौठे से लेकर बंदी के पहिलौठे तक, और सब पशुओं में से पहिलौठोंको भी मार डाला।

30 फिरौन और उसके सब हाकिम, और सब मिस्री रात को उठे, और मिस्र देश में बड़ा विलाप हुआ, क्योंकि ऐसा कोई घर नहीं, जिस में कोई मरा न हो।

-फिरौन के जेठा पुत्र और मिस्रियों के सभी पहलौठे मर गए।

-फिरौन के पशुओं में से जेठा और मिस्रियों के पशुओं में से सब पहिलौठे मर गए।

-क्या परमेश्वर ने मिस्रियों के सभी पहिलौठों को मार डाला जैसा उसने कहा था?

-हां।

-पाप के लिए परमेश्वर की सजा मौत है।

-परमेश्वर सभी पापों की सजा देंगे।

-परमेश्वर सभी पापों को मौत की सजा देंगे।

-जब परमेश्वर पाप को दंडित करने का फैसला करता है, तो कोई भी बच नहीं सकता है।

-क्या इस्राएलियों में से कोई पहलौठा मारा गया?

-नहीं।

-इस्राएलियों में से कोई पहलौठा क्यों नहीं मारा गया?

-क्योंकि इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञा मानी, और लोहू को अपने घरोंके किवाड़ोंपर लगाया।

-जिस प्रकार दोषरहित मेढ़ा इसहाक के स्थान पर मर गया, उसी प्रकार बिना दोष के मेम्ने इस्राएलियों के पहलौठे के स्थान पर मर गए।

-क्योंकि इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञा मानी, क्या परमेश्वर ने अपना वचन पूरा किया और इस्राएलियों के घरों को पार कर गया?

-हां।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से और गुलामी से बाहर निकालने के अपने वादे को याद किया।

-परमेश्वर ने इब्राहीम और इस्राएलियों के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजने के अपने वादे को याद किया।

-इस्राएली मिस्रियों की तरह ही आदम और हव्वा की संतान थे।

-इस्राएली मिस्रियों की तरह ही पाप में पैदा हुए थे।

-इस्राएलियों ने पाप किया था और मिस्रियों की तरह ही मरने के योग्य थे।

-यह केवल ईश्वर की कृपा थी जिसने इस्राएलियों को बचाया।

-परमेश्वर की कृपा ही किसी को बचाती है।

-फिरौन के पहलौठे और मिस्रियों के सभी पहलौठों के मरने के बाद, फिरौन ने क्या किया?

आइए पढ़ें निर्गमन 12:31-36

31-रात में फिरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, "उठ! तू मेरी प्रजा को और इस्राएलियों को छोड़ दे! जाओ, यहोवा की उपासना करो, जैसा तू ने विनती की है।

32 अपनी भेड़-बकरी और गाय-बैल ले लो, जैसा तू ने कहा है, और चला जा। और मुझे आशीर्वाद भी दें।"

33-मिस्र के लोगों ने लोगों से आग्रह किया कि वे जल्दी करें और देश छोड़ दें। "अन्यथा के लिए," उन्होंने कहा, "हम सब मर जाएंगे!"

34 तब लोगों ने अपना आटा खमीर डालने से पहिले लिया, और अपने कन्धे पर पहिने हुए कुंडों को गूंथकर ले गए।

35 इस्राएलियों ने मूसा की आज्ञा के अनुसार किया, और मिस्रियों से चांदी और सोने की वस्तुएं और वस्त्र मांगे।

36 यहोवा ने मिस्रियों पर प्रजा पर अनुग्रह किया या, और जो कुछ उन्होंने मांगा वह उन्हें दिया; इसलिथे उन्होंने मिस्रियोंको लूटा।

-उस रात फिरौन ने मूसा को बुलाया और इस्राएलियों को जाने दिया।

-फिरौन ने सोचा कि वह परमेश्वर के खिलाफ लड़ने में सक्षम है।

-फिरौन ने सोचा कि वह परमेश्वर से लड़ने और परमेश्वर को हराने में सक्षम है।

-शैतान ने यह भी सोचा कि वह परमेश्वर से लड़ने और परमेश्वर को हराने में सक्षम है।

-परमेश्वर को कोई नहीं हरा सकता।

-परमेश्वर के काम को कोई नहीं रोक सकता।

-परमेश्वर उन्हें बचाएंगे जो परमेश्वर की राह पर चलते हैं।

-परमेश्वर उन्हें नष्ट कर देंगे जो अपना रास्ता अपनाते हैं।

आइए पढ़ें निर्गमन 12:51

51-और उसी दिन यहोवा इस्राएलियोंको उनके दल दल करके मिस्र से निकाल ले आया।

-परमेश्वर ने अपना वादा निभाया और इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकाला।

-क्या फिरौन परमेश्वर से लड़ सकता है और जीत सकता है?

-नहीं।

-क्या कोई परमेश्वर से लड़ सकता है और जीत सकता है?

-नहीं।